International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232
Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 4; Issue 2; March 2018; Page No. 36-37

राष्ट्रवाद के जनक : मोहम्मद अली जिन्ना

दुलारी कुमारी [1]
[1] अतिथि शिक्षिका, हिन्दी विभाग, बी0एस0के0 कॉलेज, मैथन, धनबाद, झारखण्ड, भारत।

सारांश
'राष्ट्रवाद' एक राजनीतिक चिंतन तथा विचारों में एक उभयभावी अवधारणा रही है। सभी प्रकार के मौजूदा 'वादों' जैसे– साम्राज्यवाद, धर्मनिरपेक्षवाद, उदारवाद, समुदायवाद, क्षेत्रवाद, गांधीवाद, अन्तर्राष्ट्रीयवाद और राष्ट्रवाद आदि में, राष्ट्रवाद की अवधारणा सबसे अधिक विमर्शित और प्रतिस्पर्धात्मक रही है।

मूल शब्द : साम्राज्यवाद, धर्मनिरपेक्षवाद, उदारवाद, समुदायवाद, क्षेत्रवाद, गांधीवाद।

प्रस्तावना

मो0अली जिन्ना का कथन है कि ''मै प्रथमतः राष्ट्रवादी हूँ, द्वितीयतः राष्ट्रवादी हूँ और अंततः राष्ट्रवादी हूँ।'' दादाभाई नौरोजी और गोपालकृष्ण गोखले, जिन्हें जिन्ना अपना गुरू मानते थे, ये दोनों जिन्ना के देश सेवा की भावना, साहस, आत्मनिर्भरता और सांगठनिक योग्यता से प्रभावित थे। इन लोगों की प्रेरणा से युवा जिन्ना ने भारत की आजादी, एकता, शान्ति तथा प्रगति और खुशहाली पर ले जाने का प्रण लिया।[1] 1905 ई0 में कलकत्ता में सम्पन्न कॉग्रेस की 22वें अधिवेशन में जिन्ना ने साहस के साथ कहा था–''मैं आपलोगों का ध्यान इस तथ्य की ओर आकृष्ट करना चाहता हूँ कि मुसलमान समुदाय के साथ ठीक वैसा ही वर्ताव करना चाहिए जैसा कि हिन्दुओं के साथ। जिस आधार पर कॉग्रेस का गठन किया गया है, उसमें सभी समान हैं अर्थात किसी विशेष समुदाय के लिए कोई विशेष आरक्षण व्यवस्था नहीं होना चाहिए। [2]

जिन्ना ने हिन्दुओं और मुसलमानों की एकता को तोड़ने के इरादे से किये जा रहे बंगाल विभाजन का विरोध किया था और कहा था कि –''सरकार साम्प्रदायिक आधार पर बंगाल को विभाजित करके साम्प्रदायिकता फैलाना चाहती है।[3] जिन्ना के क्रिया–कलापों में साम्प्रदायिक भावनाओं तथा पूर्वाग्रहों का उनके निजी तथा सार्वजनिक जीवन में कोई स्थान नहीं था। जिन्ना के विश्व दृष्टिकोण में ईश्वर और अल्लाह के लिए कोई स्थान नहीं था। केवल मुसलमानों की धार्मिक और राजनीतिक सभा में जिन्ना कभी नहीं जाते थे। वे प्रगतिशील तथा आधुनिक थे।[4] वे पूरी धार्मिकता के साथ प्रत्येक सुबह अपनी दाढ़ी बनाते तथा ठीक उतनी ही धर्मपरायणता से प्रत्येक शुक्रवार को मस्जिद से दूर–दूर रहने का प्रयास करते थे। जिन्ना धार्मिक असहिष्णुता से नफरत करते थे तथा धर्मान्ध मुल्लाओं, मोलवियों और धर्मोपदेशक से घृणा करते थे। वे कहते थे कि हमारे पास हिन्दू, मुस्लिम समस्या का समाधान है, आप अपने पुराणपंथीपंडितों, पंडितों को नष्ट कर दें और हम अपने मुल्लाओं को नष्ट कर देंगे और फिर धार्मिक शांति स्थापित हो जाएगी।[6] वे मुल्लाओं की कट्टरता और पाखण्ड को बेहद नापसंद करते थे। एक बार उन्होंने पंडित मोतीलाल नेहरू को बताया–''मैं मुसलमानों की किसी भी मूर्खतापूर्ण बातों में विश्वास नहीं करता, यद्यपि हमें इन मूर्खों को अपने साथ लेकर किसी तरह चलना पड़ता है।[7]जिन्ना उदारवादी राजनीति में विश्वास करते थे। वे स्वराज्य प्राप्त करने के लिए हिंसा, रक्तपात अथवा क्रांतिकारी उपायों के विरोधी थे। सन् 1904 ई0 में कांग्रेस के अधिवेशन में उन्होंने हिस्सा लिया और उन्हें सुरेन्द्रनाथ वनर्जी, लाला लाजपत राय तथा गोखले के साथ इंगलैण्ड के राजनीतिक नेताओं के समक्ष भारत के दावों को प्रस्तुत करने के लिए चयनित किया गया।[8]

1901 ई0 में कॉग्रेस के कलकत्ता अधिवेशन में कॉग्रेस के अध्यक्ष दादा भाई नौरोजी ने जिन्ना को सचिव के रूप में नियुक्त किया तथा पंडित मदनमोहन मालवीय ने जिन्ना को प्रेरित करके भाषण देने के लिए तैयार किया। यह भारतीय राष्ट्रीय कॉग्रेस के मंच से जिन्ना का प्रथम भाषण था।[9] सन् 1913 में जब जिन्ना और गोखले दोनों इंगलैण्ड में थे तो संभवतः गोखले के परामर्श पर जिन्ना ने ऑल इंण्डिया मुस्लिम लीग की सदस्यता ग्रहण कर ली। जिन्ना के मुस्लिम लीग में शामिल होने के फैसले को कॅग्रेस के करांची अधिवेशन में उचित ठहराते हुए उसकी प्रशंसा की गयी और करतल ध्वनि से उनका स्वागत किया गया।[10]

एम0सी0 छागला जिन्होंने छः वर्षों तक जिन्ना के जुनियर के रूप में वकालत किया, वे लिखते हैं कि –''जिन्ना कहते थे,मुकदमा कैसा भी क्यों न हो, अपने मुवक्किल के लिए भरपूर प्रयास करना वकील का कर्त्तव्य होता है। उनकी दक्षता के कारण ही उन्हें 'ग्रेट लॉयन ऑफ द वार' कह कर सम्मानित किया गया। वे प्रथम श्रेणी में क्रॉस एग्जामिनर थे और उनके द्वारा लिए गये प्रत्येक मुकदमें का प्रस्तुतीकरण उनकी कला का एक नमूना था।[11] जिन्ना जन–नेताओं में गोखले और तिलक का सर्वाधिक सम्मान करते थे। गोखले की ईमानदारी, विवेकशीलता तथा आत्मसंयम से इतने प्रभावित थे कि वे कहा करते थे–'मेरी अभिलाषा है कि मैं मुसलमान गोखले बनूँ।'[12] तिलक की देश–भक्ति, अथक संघर्ष तथा उनकी अनन्त कुर्बानियों ने जिन्ना को उनका प्रशंसक बना दिया। अपने व्यवसायिक परंपरा का उलंघन करते हुए वे तिलक के खिलाफ चल रहे मुकदमों में उनसे कभी कोई फीस नहीं लेते थे, जो राष्ट्रवादी चरित्र को प्रदर्शित करता है।[13]

01 अगस्त 1920 ई0 को तिलक के स्वर्गवास के अवसर पर जिन्ना ने शोक व्यक्त करते हुए कहा–''श्री तिलक एक निःस्वार्थ देशभक्त थे। बहुत वर्षों तक उनके साथ जुड़े रहने के दौरान अपनी महान बौद्धिक क्षमताओं और खासकर अपने राष्ट्रवादी दृष्टिकोण के कारण उन्होंने मेरा सम्मान जीत लिया और मुझे अपना प्रशंसक बना लिया। वे बिना किसी पुरस्कार के देश की सेवा करने की इच्छा रखते थे।''[14]

जिन्ना एकता और अखण्ड भारत के दूत के समान थे। वे साम्प्रदायिकता से नफरत और साम्प्रदायिक राजनीति की सदैव निंदा करते थे। उन्होंने मुस्लिम लीग, बंगाल विभाजन का सबल विरोध करके, मार्ले मिण्टों सुधारों के तहत मुसलमानों को दिये गये प्रतिनिधित्व निर्वाचक मण्डल के बुरे उद्दश्यों से भारतीय राज्य–व्यवस्था में छोड़े गए घृणित वायरस की संज्ञा दी।[15] जिन्ना के प्रखर अधिवक्ता की पूँज सदैव राष्ट्रवादी पक्ष को शक्ति प्रदान करती थी और सरकारी पक्ष को परेशानी में डाल देती थी। उन्हें विक्टोरियंस में से अन्तिम ग्लेडस्टॉन अथवा डिजरायली जैसे संसद के रूप में माना जाता था। वे कौंशिल के सर्वाधिक प्रभावशाली तथा योग्यतम परिमार्जित वक्ताओं में से एक थे।[16] जिन्ना व्यवहारिक थे, उनकी कार्य नीति, राजनीतिक दक्षता, राष्ट्र के वास्तविक हितों की रक्षा का समर्थन तथा भावनाओं की जगह तर्क, बुद्धि, विवेक आदि से फैसले लेने के क्षेत्र में उनसे अग्रणी कोई नहीं था।[17]

20वीं शताब्दी के दूसरे दशक में जिन्ना को राष्ट्रीय आंदोलन का नेता माना जाने लगा था। वे कॉग्रेस के प्रमुख नेता, होमरूल लीग की बम्बई शाखा एवं ऑल इण्डिया मुस्लिग लीग के अध्यक्ष थे। राष्ट्रवादी शक्तियों की तीन धाराएँ उनके नेतृत्व में एकजुट हुई और जिन्ना ने घोषित किया कि शुद्ध राजनैतिक आधार पर हमें खुल्लम–खुल्ला घोषित करना चाहिए कि भारत केवल भारतीयों के लिए है। स्वराज्य के लिए संघर्ष चलाना प्रत्येक भारतीय का कर्त्तव्य होना चाहिए।[18]

अंततः यह कहना अनुचित न होगा कि 1924 ई0 में प्रत्येक दृष्टि से जिन्ना ऐसे महापुरूष थे, जिन्हें राष्ट्रवाद का अहंकार और साम्प्रदायिकता की भावना निगल न सकी। उनके सभी क्रिया–कलापों तथा भाषणों में उनकी देश–भक्ति प्रतिबिम्बित होती थी।

संदर्भ सूची

1. लक्षमण जयाराम–इण्डियन लीडर्स ऑफ टुडे,भाग–1,
2. करांची–1942–पृ0–30–31
3. एनुअल कॉग्रेस रिपोर्ट–1905, पृ0–120
4. विनयेन्द्र मोहन चौधरी– मुस्लिम पॉलिटिक्स इन इण्डिया, कलकत्ता लॉगमैन–1946, पृ0–20
5. बी0आर0 अम्बेदकर– पाकिस्तान एण्ड पार्टीशन, ठक्कर एण्ड कम्पनी, बम्बई–1940, पृ0–405
6. लेरी कोलिन्स एण्ड लॉ पियरे– फ्रीडम एट मिडनाइट, बम्बई–1975, पृ0–102
7. वी0 शिवाराम –इण्डियन फ्रीडम स्ट्रगल, नई दिल्ली–1972, पृ–126
8. वी0वी0 कुलकर्णी–इण्डिया एण्ड पाकिस्तान, जायको पब्लिकेशन, बम्बई–1973, पृ0–274
9. वी0आर0 नन्दा – गोखले इण्डियन मॉडरेट्स एण्ड द राज, ऑक्सफार्ड युनिवर्सिटी प्रेस–लन्दन – 1977
10. लेजिस्लेटिव असेम्बली डिवेट्स, 18 मार्च 1926, पृ0–2740
11. पी0सी0 राय और चौधरी–गांधी एण्ड हिज कान्टेपोर्टिज, नई दिल्ली–1972, पृ0–181
12. एम0सी0 छागला–रोजेज इन दिसम्बर, भारतीय विद्या भवन, बम्बई 1978, पृ0–80
13. अजीज वेग– जिन्ना एण्ड हिज टाइम्स, बाबर एण्उ अमीर पब्लिकेषन, पाकीस्तान– 1986, पृ–36
14. वही, पृ0– 200
15. टी0वी0 पार्वते– बाल गंगाधर तिलक, नवजीवन पब्लिकेशन–अहमदाबाद–1958, पृ0–539
16. विनियेन्द्र माहन चौधरी, वही,पृ0–21
17. कोलिन्स एण्ड लॉ पियरे– फ्रीडम एट मिडनाइट, पृ0–101
18. मार्गरीटा वार्न्स– इण्डिया टुडे एण्ड टूमॉरो– जार्ज एलेन, लंदन
19. वी0एन0नाइक– मि0 जिन्ना, ए पॉलिटिकल स्टडी–1937, पृ0–37–38